वे अन्त तक जुड़े रहे।

वे टोडरमल स्मारक की जिम्मेवारी से भी मुक्त होना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने अनेक बार त्याग-पत्र भी दिये, पर हर बार मेरे अनुरोध को वे ठुकरा न सके; मेरा कुम्हलाया चेहरा देखते तो उनका संकल्प ढीला पड़ जाता।

अन्त में दिनांक 7 जनवरी 1999 की ट्रस्ट की मीटिंग में वे पूर्णत: निवृत्त होने के लिए अड़ गये और ट्रस्ट के समक्ष अपने कार्य का सम्पूर्ण भार और महामंत्री पद मुझे देने का प्रस्ताव किया।

मेरे मना करने पर उन्होंने कहा ह्न ''मैं वर्षों से इस प्रयत्न में हूँ कि यह भार आप पर न आवे और आप अपना काम निश्चिन्त रहकर करते रहें; क्योंकि साहित्य सेवा और धर्मप्रचार का जो कार्य आप कर सकते हैं, वह अन्य के वश की बात नहीं है; पर क्या करें मुझे अनेक प्रयत्नों के बाद भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला कि जो मेरे इस कार्य में हाथ बटांता हो। जो कार्य मैं करता हूँ, वह कार्य करने को कोई तैयार नहीं है; सभी अपनी-अपनी रुचि के कार्यों में ही संलग्न हैं। अब मुझे निवृत्त तो होना ही है; अत: अब आपको यह सब संभालना होगा।

सभी लोग उनकी बात का समर्थन करने लगे तो मैंने यही कहा कि आप चिन्ता न करें, कार्य मैं देखूँगा; पर महामंत्री आप आजीवन ही रहेंगे।

सम्पादकीय

वीतराग-विज्ञान ही तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 20 236 अंक : 8

लौहपुरुष स्वर्गीय श्री नेमीचन्दजी पाटनी

वृद्धावस्था में भी जवानी के जोश से भरे, वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार में सम्पूर्णत: समर्पित, कर्तव्यनिष्ठ कर्मठ कार्यकर्ता एवं गुरुगंभीर व्यक्तित्व के धनी, लौहपुरुष श्री नेमीचन्दजी पाटनी से सम्पूर्ण दिगम्बर जैन समाज में आज कौन अपरिचित है ? आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी द्वारा सम्पन्न आध्यात्मिकक्रान्ति को मूल दिगम्बर जैन समाज में प्रवाहित करने के भागीरथी प्रयास के प्रमुख सूत्रधारों में वे भी एक प्रमुख सूत्रधार थे।

विगत पैंतीस वर्षों से मेरा उनसे अत्यन्त निकट का सम्पर्क रहा है। ईस्वी सन् 1967

सलग्न है। अब मुझे निवृत्त तो होना ही है; अत: अब आपको यह सब संभालना होगा।

सभी लोग उनकी बात का समर्थन करने लगे तो मैंने यही कहा कि आप चिन्ता न करें, कार्य मैं देखूँगा; पर महामंत्री आप आजीवन ही रहेंगे।

वे इस बात पर राजी हो गये। इसप्रकार सभी ने मुझे कार्यकारी महामंत्री बना दिया। यद्यपि तभी से वे सब कार्य मैं देख रहा हूँ, जो पाटनीजी देखा करते थे; तथापि उनका मागदर्शन निरन्तर प्राप्त होता रहा है। उनसे विचार-विमर्श लिए बिना मैंने कुछ भी नया नहीं किया है। अब आज उनका अभाव मेरे लिए सर्वाधिक कष्टकारी है; क्योंकि उनका सहयोग सर्वाधिक मुझे ही प्राप्त होता रहा है।

यह बात नहीं है कि कार्यकर्ताओं की कोई कमी है। कार्यकर्ताओं की तो एक लम्बी कतार खड़ी है; तथापि नीति निर्धारण और उसके निरापद क्रियान्वयन में जो गंभीरता चाहिए, परिपक्वता चाहिए; वह सर्वत्र सहज उपलब्ध नहीं होती।

क्रमबद्धपर्याय में जो होना होगा, उसके अनुसार सब संयोग सहज ही जुट जायेंगे ह्न इस विश्वास से ही चित्त शान्त होता है। अत: इस संकल्प के साथ विराम लेता हूँ कि जबतक कार्य करने की क्षमता शेष है; तबतक उनके द्वारा आरंभ किये गये कार्य उसी गति से चलते रहने में जो कुछ भी मुझसे बन सकेगा, अवश्य करूँगा। **ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल**

में प्रवाहित करने के भागीरथी प्रयास के प्रमुख सूत्रधारों में वे भी एक प्रमुख सूत्रधार थे।

विगत पैंतीस वर्षों से मेरा उनसे अत्यन्त निकट का सम्पर्क रहा है। ईस्वी सन् 1967 से वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य हम दोनों कंधे से कंधा मिलाकर करते आ रहे हैं। हमारी मित्रता का आधार भी विचारों एवं कार्यशैली की समानता ही रही है। इसीकारण यह मित्रता उगते हुए सूर्य के समान निरन्तर प्रगाढ़ता को प्राप्त होती रही है।

वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के प्रति उनका अगाध समर्पण भाव था। उनके लिए जीवन में वीतरागी तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार ही सब कुछ था।

तत्त्वज्ञान के महान कार्य के प्रति उनके समर्पण के दो प्रसंग मेरे स्मृतिपथ में आ रहे हैं। प्रथम तो भगवान महावीर के 25 सौ वें निर्वाण वर्ष में सोनगढ़ में सम्पन्न पंचकल्याणक की बात है और दूसरी सेठी कॉलोनी, जयपुर में सम्पन्न पंचकल्याणक की बात है।

सोनगढ़ पंचकल्याणक की व्यवस्था का सर्वाधिक भार पाटनीजी के कंधों पर ही था। उसीसमय उनके सगे बहनोई लादूलालजी पहाड़िया अत्यधिक बीमार हो गये, मारणान्तिक अवस्था में पहुँच गये। उन्हें भावनगर अस्पताल के आपातकालीन वार्ड में भर्ती कराना पड़ा। ऐसी स्थिति में भी आप विचलित नहीं हुए। सम्पूर्ण कार्य को वैसे ही संभाले रखा, जैसे सामान्य स्थिति में संभालते थे। दिन भर पंचकल्याणक का कार्य करते और रात को 11

बजे भावनगर उनकी सेवा में पहुँचते, फिर प्रात: 5 बजे अपनी ड्यूटी पर सोनगढ़ आ जाते।

सेठी कॉलोनी, जयपुर के पंचकल्याणक के बीच में ही आपके बड़े पुत्र श्री सुरेन्द्रकुमारजी पाटनी का 51 वर्ष की उम्र में अचानक देहावसान हो गया। यह पाटनी परिवार पर वज्रपात था। हम सब उनकी श्मशानयात्रा में गये थे। पाटनीजी तो थे ही। संध्या का समय था और चिता जल रही थी। इसी बीच पाटनीजी मेरे पास आये और बोले ह्न

''डॉक्टर साहब ! आप जाइये, आपको प्रवचन करना है, यहाँ तो हम सब हैं ही।''

मैंने कहा ह्न ''आप क्या कह रहे हैं ? ऐसे अवसर पर मैं कैसे जा सकता हूँ? आज कोई और प्रवचन कर लेगा, अनेक विद्वान वहाँ उपस्थित हैं।''

वे बड़ी ही गंभीरता से बोले ह्न ''इस औपचारिकता में क्या रखा है ? आपको सुनने हजारों लोग बाहर के आये हैं, उन्हें आपका लाभ मिलना ही चाहिए। यह सब तो चलता ही रहेगा, यह सब तो दुनिया है। आप तो जाइये।''

मैंने फिर कहा ह्न ''अभी तो देर है, थोड़ी देर बाद चला जाऊँगा।''

वे बोले ह्न ''नहीं, आप अभी ही चले जाइये। आप घर जायेंगे, नहायेंगे, कपड़े बदलेंगे; सर्दी बहुत है, थोड़ा ताप लीजिए, अन्यथा तबियत खराब हो जायेगी।''

ह्न ऐसा कहते हुए तबतक खड़े रहे, जबतक कि मैं वहाँ से चल नहीं दिया।

संभावना रहती और जिन्हें सुनने की भावना से जनता शिविरों में आती है।

समस्याओं से घबड़ाना तो उनकी प्रकृत्ति में ही नहीं था। शोभा के पदों पर रहना भी उन्हें स्वीकार नहीं होता। जिस संस्था से जुड़ते थे, पूरी सक्रियता के साथ ही जुड़ते थे; जो भी पद संभालते थे, पूरी तत्परता के साथ संभालते हैं। जहाँ से हटते थे, उसे चित्त में से भी हटा देते थे।

देश में हजारों संस्थायें हैं और उनके मंत्री भी हैं ही, पर ऐसा मंत्री कहीं भी देखने को नहीं मिलेगा, जो संस्था के छोटे-बड़े सभी कामों में तिल में तेल के समान समाहित हो, घर-परिवार के सब काम छोड़कर संस्था के लिए ही पूर्णत: समर्पित हो, जिसके रोम-रोम में तत्त्वज्ञान समाहित हो और संस्था के प्रत्येक कार्यकलाप पर जिसकी मजबूत पकड़ हो। पाटनीजी में उक्त सभी विशेषतायें सहज ही उपलब्ध थीं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर से जो भी कार्य आज हो रहा है, उसका सर्वाधिक श्रेय श्री नेमीचन्दजी पाटनी को ही है। इससे प्रत्येक कार्य पर उनके दृढ़ व्यक्तित्व की छाप स्पष्ट नजर आती है।

ऐसे लोग बहुत कम होते हैं, जो व्यक्तियों की अच्छाईयों और बुराईयों की जड़ तक पहुँचने की क्षमता रखते हैं, बुराईयों पर अंकुश लगाना जानते हैं, अच्छाईयों को प्रोत्साहित करना जानते हैं और निन्दा-प्रशंसा से अप्रभावित रहकर व्यक्तियों को, मिशन को, संस्थाओं

वे बोले ह्न नहीं, आप अभी ही चले जाइये। आप घर जायेंगे, नहायेंगे, कपड़े बदलेंगे; सर्दी बहुत है, थोड़ा ताप लीजिए, अन्यथा तबियत खराब हो जायेगी।''

ह्न ऐसा कहते हुए तबतक खड़े रहे, जबतक कि मैं वहाँ से चल नहीं दिया।

मेरे साथ अनेक और लोग भी सोचते ही रह गये कि ये किस मिट्टी के बने हुए हैं। इतना धैर्य क्या तत्त्वज्ञान की गहराई के बिना सम्भव है ? तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार की इतनी प्रबल भावना किन-किन में है ? यह अपनी-अपनी छाती पर हाथ रखकर देखने की बात है ? जरा-सी प्रतिकूलता आने पर हम प्रवचन नहीं करेंगे या इस काम में सहयोग नहीं देंगे। इसप्रकार की प्रवृत्तिवालों को अपने अंतर को गहराई से देखने की महती आवश्यकता है और पाटनीजी के आदर्श जीवन और विचारों से बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता भी है।

वीतरागी तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का कोई भी अवसर चूकना उन्हें स्वीकार नहीं था; अपितु उसका अच्छे से अच्छा उपयोग कर लेना उनकी अपनी विशेषता थी।

शिविरों में वीतरागी तत्त्वज्ञान सीखने की भावना से आनेवाली जनता के समय और भावना की उनकी दृष्टि में कितनी कदर थी ? इसे भी मैंने अनेक प्रसंगों में गहराई से अनुभव किया है। शिविरों में 20-20 दिनों तक रहकर सम्पूर्ण व्यवस्था का भार अपने सिर पर ढोकर भी तथा स्वयं प्रवचनकार होने पर भी स्वयं एक भी प्रवचन नहीं करते; अपितु उन्हीं लोकप्रिय प्रवक्ताओं के प्रवचन कराते कि जिससे जनता को अधिकतम लाभ पहुँचने की

ऐसे लोग बहुत कम होते हैं, जो व्यक्तियों की अच्छाईयों और बुराईयों की जड़ तक पहुँचने की क्षमता रखते हैं, बुराईयों पर अंकुश लगाना जानते हैं, अच्छाईयों को प्रोत्साहित करना जानते हैं और निन्दा-प्रशंसा से अप्रभावित रहकर व्यक्तियों को, मिशन को, संस्थाओं को अपने सुनिश्चित पथ पर अडिग रखते हैं, झंझावातों से बचाये रखते हैं, गलत लोगों से सुरक्षित रखते हैं एवं सन्मार्ग पर निरन्तर गतिशील भी रखते हैं। पाटनीजी उन्हीं लोगों में से एक थे। यही कारण है कि उनकी छत्रछाया में जो भी व्यक्ति व संस्थायें रहीं; वे सुरक्षित रहीं, निरन्तर गतिशील रहीं और प्रगति पथ पर अग्रसर होती रहीं। जिन व्यक्तियों या संस्थाओं से उनके सलाह-मशविरों की उपेक्षा की, वे अपने मार्ग से भटक गईं, उन्हें अपनी साख गवानी पड़ी। उन जैसा सलाहकार, उन जैसा मित्र मिलना भी बड़े भाग्य की बात है। उससे भी बड़ी बात है, उनकी मित्रता और सलाह का पूरा-पूरा लाभ उठा लेना।

आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। उनके स्वर्गवास से जो अपूरणीय क्षति हुई है; उसकी पूर्ति संभव नहीं है। विशेषकर मेरे लिए तो उनका वियोग वज्रपात जैसा ही है; क्योंकि जो कार्य हम दोनों ने मिलकर आरंभ किये हैं, उन्हें अब.....।

विगत दिनों में उनकी वृत्ति और प्रवृत्ति सिमटने की हो गई थी। धीरे-धीरे उन्होंने सभी संस्थाओं से अपने को पृथक् कर लिया था। बस एक टोडरमल स्मारक ही ऐसा था, जिससे

अलीगढ़ पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

अलीगढ़ और हाथरस के मध्य सासनी गाँव के निकट अलीगढ़ – आगरा रोड पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के प्रभावना योग से नवीनतम निर्मित मंगलायतन तीर्थधाम का पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव 31 जनवरी से 6 फरवरी 03 तक बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद एवं पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़ के निर्देशन में बाल ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना के प्रतिष्ठाचार्यत्व में सानन्द सम्पन्न हुआ। सह प्रतिष्ठाचार्य के रूप में ब्र. हेमन्त गांधी थे। स्टेज का सम्पूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिन्दवाड़ा और उनके सहयोगी देख रहे थे।

प्रतिदिन पंचकल्याणकों पर हुए डॉ. भारिल्ल के प्रवचन मुख्य आकर्षण के केन्द्र थे। साथ में वयोवृद्ध विद्वान कैलाशचंदजी बुलंदशहर, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, ब्र. सुमतप्रकाशजी आदि विद्वानों के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ भी समाज को प्राप्त हुआ।

इस पंचकल्याणक की सबसे बड़ी विशेषता विदेशों से पधारे सैंकड़ों भाई-बहिन थे, जिन्होंने न केवल इसका भरपूर लाभ लिया; अपितु इस तीर्थ के निर्माण और पंचकल्याणक में सर्वाधिक आर्थिक सहयोग दिया।

प्रथम दिन केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने ज्ञानदीप का प्रज्ज्वलन करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

अंतिम दिन उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने तीर्थधाम मंगलायतन का उद्घाटन किया। उनके साथ मुख्यअतिथि के रूप में संविधान वेत्ता एल.एम.सिंघवी भी थे।

104 वर्षीय विद्वान चुन्नीलालजी शास्त्री दिवंगत

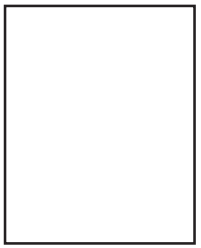

चन्देरी, 6 फरवरी श्री अ. भा. दिग. जैन विद्वत्परिषद् एवं परवार महासभा के संरक्षक, 9 मार्च 1899 को जन्मे और 6 फरवरी 2003 को दिवंगत – इसप्रकार 19 वीं, 20 वीं एवं 21 वीं – इन तीन शताब्दियों को स्पर्श करने वाले वयोवृद्ध विद्वान पण्डित चुन्नीलालजी शास्त्री का वसंत पंचमी के दिन 104 वर्ष की आयु में समताभाव पूर्वक निधन हो गया।

आपने खुरई (म.प्र.) में अध्यापन आरंभ किया। वहाँ स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लिया और जेल गये। बाद में बीना, खनियांधाना तथा चन्देरी में अध्यापन कार्य किया। खुरई के महाराजा खलकसिंहजू देव के आग्रह पर आपने उनके पुत्र को शिक्षा-दीक्षा दी। डॉ.महेन्द्रकुमारजी न्यायाचार्य, पण्डित पन्नालालजी काव्यतीर्थ (कोलकाता), श्रीमंतसेठ, ऋषभकुमारजी खुरई आदि आपके प्रमुख शिष्यों में थे। आपने थूवौनजी क्षेत्र के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। चन्देरी में दिगम्बर जैन औषधालय की स्थापना की। चन्देरी मण्डल कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में आप राजनीति में भी सक्रिय रहे।

आपके चार पुत्र महेन्द्रकुमार (भू. पू. मण्डल अध्यक्ष भाजपा), जीवन्धर, जयकुमार तथा सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. राजेन्द्र बंसल तथा दो पुत्रियाँ गुणमाला भारिल्ल एवं राजेश गुरहा हैं। समन्वय वाणी के सम्पादक प्रसिद्ध पत्रकार अखिल बंसल आपके पौत्र हैं।

अंत समय में मुनिश्री निर्वाणसागरजी ने घर जाकर उन्हें अनेकबार सम्बोधा। फलस्वरूप आपने समताभाव पूर्वक पद्मासन अवस्था में इस नश्वर देह का परित्याग किया।

प्रथम दिन केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री डॉ. मुरली मनोहर जोशी ने ज्ञानदीप का प्रज्ज्वलन करके कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

अंतिम दिन उप-प्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने तीर्थधाम मंगलायतन का उद्घाटन किया।उनके साथ मुख्यअतिथि के रूप में संविधान वेत्ता एल.एम.सिंघवी भी थे।

श्री पवन जैन ने अपने अथक परीश्रम एवं अपनी संचालन कुशलता से न केवल अल्पकाल में इस नवीनतीर्थ का निर्माण कर दिया; अपितु जिस अपार जन समुदाय की उपस्थिति में सुव्यवस्थित व्यवस्था के साथ प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न किया है, वह अपनेआप में अद्वितीय है। सबसे बड़ी बात यह रही कि इस प्रसंग पर न केवल मुमुक्षु समुदाय के सभी ग्रुपों के लोग एक मंच पर एक साथ उपस्थित थे, अपितु वे लोग भी बहुत संख्या में आये थे, जो लोग स्वामीजी की इस आध्यात्मिक क्रान्ति को पसंद नहीं करते हैं। सबको एक स्टेज पर लाकर दि. जैन समाज की एकता का जो आदर्श प्रायोगिक रूप में प्रस्तुत किया है, उसके लिये श्री पवन जैन की जितनी प्रशंसा की जाये उतनी कम है।

पवन जैन की अबतक की कार्यकुशलता देखकर यह विश्वास होता है कि भविष्य में भी जो उन्होनें सोच रखा है; वह भी निश्चितरूप से क्रियान्वित होगा।

इस अवसर पर लगभग 6 लाख का सत्साहित्य एवं 2 लाख 75 हजार के कैसिट घर-घर पहुँचे। जिसमें से 1 लाख 85 हजार का सत्साहित्य तथा 7 हजार 600 घण्टे के सी.डी. एवं 1 हजार 129 घण्टे के ऑडियो कैसिट तो टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर के ही थे।

सुप्रसिद्ध लेखक डॉ. राजेन्द्र बसल तथा दो पुत्रियाँ गुणमाला भारिल्ल एव राजेश गुरहा है। समन्वय वाणी के सम्पादक प्रसिद्ध पत्रकार अखिल बंसल आपके पौत्र हैं।

अंत समय में मुनिश्री निर्वाणसागरजी ने घर जाकर उन्हें अनेकबार सम्बोधा। फलस्वरूप आपने समताभाव पूर्वक पद्मासन अवस्था में इस नश्वर देह का परित्याग किया।

स्मरण रहे कि विद्वत्परिषद् की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर दिल्ली के ऐतिहासिक रामलीला मैदान में सिद्धान्तचक्रवर्ती आचार्य श्री विद्यानन्दजी के सानिध्य में आपको स्वर्णपदक से सम्मानित किया गया था।

पद्मश्री से अलंकृत

आचार्यश्री विद्यानंदजी मुनिराज के पावन आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में जैनसमाज एवं भारत-राष्ट्र की सेवा में तन-मन-धन से समर्पित सुप्रसिद्ध समाजसेवी एवं कुन्दकुन्द भारती न्यास के न्यासी धर्मानुरागी श्रीमान् ओमप्रकाशजी जैन को इस वर्ष गणतंत्र दिवस के सुअवसर पर **पद्मश्री** के अलंकरण से विभूषित किये जाने हेतु चयनित किया गया है।

श्री जैन को यह अलंकरण महामहिम राष्ट्रपतिजी के करकमलों से भव्य समारोह में यथासमय समर्पित किया जायेगा।

उनकी इस उपलब्धि के लिये पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट परिवार उन्हें बधाई देते हुये उनके उज्ज्वल भविष्य की मंगल कामना करता है।

वीतराग-विज्ञान के स्वामित्व का विवरण
फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम : वीतराग-विज्ञान (हिन्दी)

प्रकाशन स्थान : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)

प्रकाशन अवधि : मासिक

मुद्रक : श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय)
जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)

प्रकाशक का नाम : ब्र. यशपाल जैन (भारतीय)
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

सम्पादक का नाम : डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (भारतीय)
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

स्वामित्व : पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक :

दिनांक - 1-3-2003

ब्र. यशपाल जैन

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

पण्डित टोडरमल ट्रस्ट के महामंत्री श्री नेमीचंदजी पाटनी की श्रद्धांजली सभा सम्पन्न

प्रसिद्ध समाजसेवी, श्रेष्ठीप्रवर, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामंत्री पण्डित नेमीचंदजी पाटनी (आगरा) को आज दि. जैन महासमिति, भारत जैन महामण्डल, राजस्थान खादी संघ, अ.भा. दि. जैन विद्वत् परिषद्, अ.भा. दि. जैन युवा परिषद्, राजस्थान जैनसभा, मंदिर महासंघ, अति. क्षेत्र महावीरजी, दि. जैन सोश्यल ग्रुप आदि भारतवर्ष की जैन समाज की शीर्षस्थ 33 विभिन्न संस्थाओं द्वारा दिनांक 31 जनवरी 2003 को श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में शोक सभा आयोजित करके श्रद्धांजलि दी गयी। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के महामंत्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, श्री महावीरजी अतिशय क्षेत्र के अध्यक्ष श्री नरेशकुमारजी सेठी, आर. के मार्बल्स के निर्देशक श्रीमान् अशोक कुमारजी पाटनी किशनगढ़, भारत जैन महामण्डल के अध्यक्ष श्री सम्पतकुमारजी गदैया, भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के संरक्षक डॉ. देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री नीमच, अतिशय क्षेत्र पदमपुरा के मंत्री श्रीमान् ज्ञानचन्दजी झांझरी, राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष श्रीमान् महेन्द्रकुमारजी पाटनी, प्रख्यात पत्रकार श्री मिलापचन्दजी डण्डिया आदि अनेक महानुभावों ने पाटनीजी के धार्मिक और सामाजिक योगदानों का स्मरण करते हुए अपनी श्रद्धांजली अर्पित की।

ज्ञातव्य है कि 20 जनवरी को पाटनीजी का 91 वर्ष की अवस्था में देहली में स्वर्गवास हो गया था।

इस अवसर पर उनके भाई सौभाग्यमलजी पाटनी ने उनकी स्मृति में 10 लाख रुपये का पारमार्थिक ट्रस्ट बनाने की घोषणा की। सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री तेजकरणजी डण्डिया ने की।

विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य है।

प्रकाशक :

दिनांक - 1-3-2003 **ब्र. यशपाल जैन**

ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

मिलापचंद डंडिया को भारतेन्दु पुरस्कार

ख्यातनामा पत्रकार श्री मिलापचंद डंडिया को भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय ने **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र पुरस्कार** से सम्मानित किया है । यह पुरस्कार उनकी हाल ही में प्रकाशित पुस्तक **मुखौटों के पीछे** के लिये दिया गया है।

इस पुस्तक का विमोचन गत सितम्बर माह में उपराष्ट्रपति महामहिम श्री भैरोंसिह शेखावत ने किया था। उपराष्ट्रपतिजी ने श्री डंडियाजी की जागरुकता, निर्भीकता तथा कर्त्तव्यनिष्ठा की सराहना करते हुये तब कहा था कि श्री डंडिया जैसे 15-20 पत्रकार देश भर में हो जायें तो देश का कायापलट हो जाये। साढ़े चार सौ पृष्ठों की यह पुस्तक श्री डंडिया की चुनिंदा पचास खोजपूर्ण रिपोर्टों को आधार बनाकर लिखी गई है।

उल्लेखनीय है कि जैन संस्कृति रक्षामंच के अध्यक्ष के रूप में श्री डंडिया द्वारा लिखित **जैन पुरातत्त्व के विध्वंस की कहानी** शीर्षक पुस्तक भी श्री डंडिया के साहसपूर्ण व प्रामाणिक लेखन का एक जीवन्त दस्तावेज है।

श्रद्धांजली अर्पित की।

ज्ञातव्य है कि 20 जनवरी को पाटनीजी का 91 वर्ष की अवस्था में देहली में स्वर्गवास हो गया था।

इस अवसर पर उनके भाई सौभाग्यमलजी पाटनी ने उनकी स्मृति में 10 लाख रुपये का पारमार्थिक ट्रस्ट बनाने की घोषणा की। सभा की अध्यक्षता प्रसिद्ध शिक्षाविद् श्री तेजकरणजी डण्डिया ने की।

इसके अतिरिक्त कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई, आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, परमागम ट्रस्ट इन्दौर, भगवान महावीर दि. जैन विद्वत्परिषद् सुजानगढ़, कुन्थुसागर दि. जैन शिक्षण परिषद् किशनगढ़, दि. जैन इन्टर कॉलेज आगरा, खण्डलवाल दि. जैन समिति आगरा, मुमुक्षु मण्डल लन्दन-कोटा-उदयपुर-अमायन-सागर-अलवर-ललितपुर-पिड़ावा आदि देश-विदेश के विभिन्न अनेक मुमुक्षु मण्डलों, फैडरेशन की शाखाओं एवं अन्य अनेक सामाजिक व धार्मिक संस्थाओं, जैन समाज के प्रमुख गणमान्य महानुभावों, विद्वानों, श्रेष्ठियों के भी शोक सन्देश हमें प्राप्त हुये हैं।

धार्मिक प्रतियोगिताएँ सम्पन्न

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के प्रांगण में महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में दिनांक 24 जनवरी से 30 जनवरी तक क्रमश: वाद-विवाद प्रतियोगिता (शास्त्री वर्ग), वाद-विवाद प्रतियोगिता (उपाध्याय वर्ग), श्लोक पाठ प्रतियोगिता, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता, काव्यपाठ (कविसम्मेलन) एवं भजन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं का संयोजन शास्त्री तृतीय वर्ष के मनोज जैन अभाना ने किया।